26 जून 2020, मूल्य 2 रुपये, वर्ष 38, अंक 12, कुल पृष्ठ 36

ISSN 2454 - 5163

वीतराग-विज्ञान

(पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट का मुखपत्र)

सम्पादक :
डॉ. हुकमचंद भारिल्ल

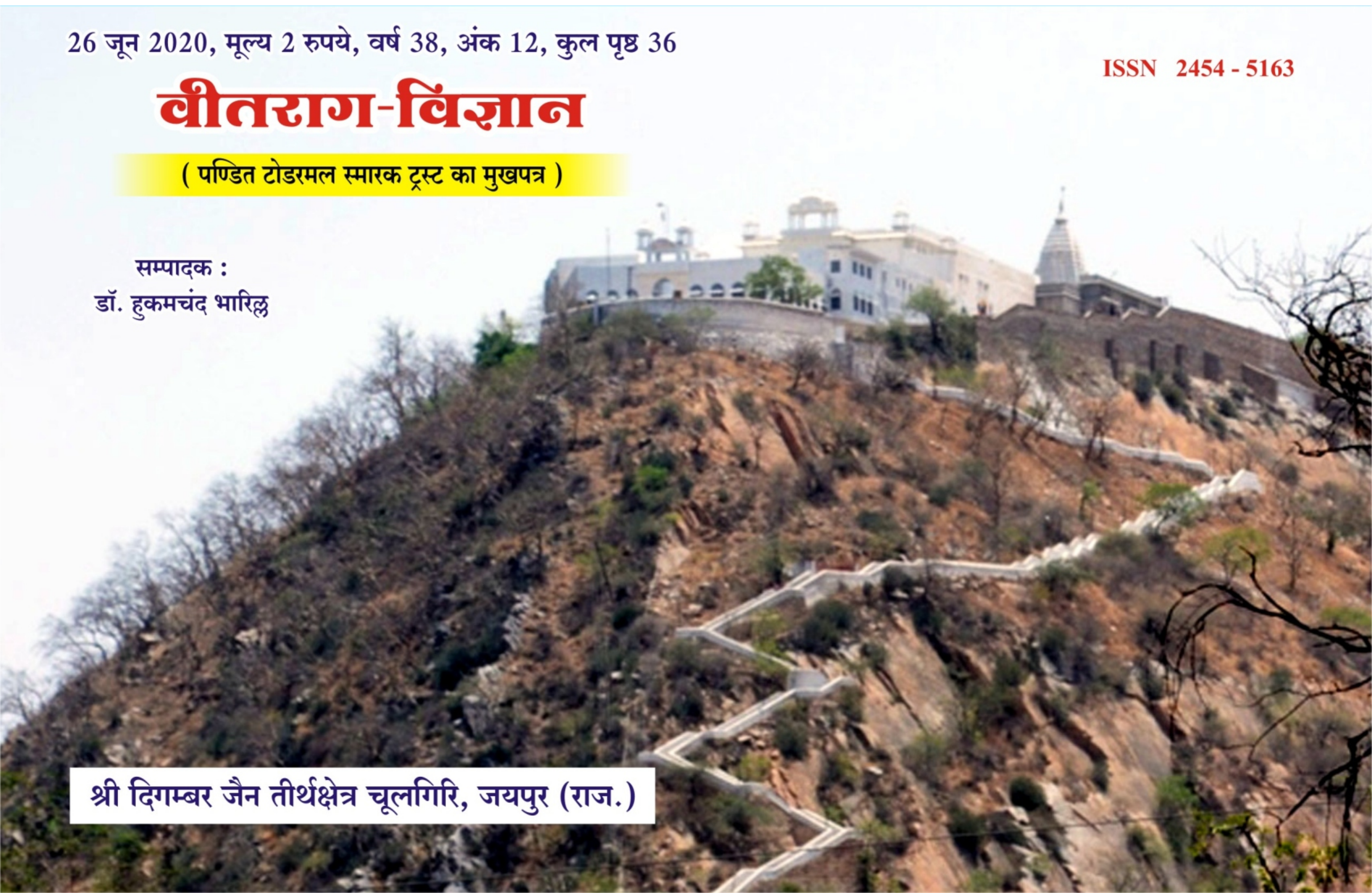

श्री दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र चूलगिरि, जयपुर (राज.)

वीतराग-विज्ञान (443)

हिन्दी, मराठी व कन्नड़ भाषा में प्रकाशित

जैनसमाज का सर्वाधिक बिक्रीवाला आध्यात्मिक मासिक

सम्पादक :
डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल
सह-सम्पादक :
डॉ. संजीवकुमार गोधा
प्रकाशक एवं मुद्रक :
ब्र. यशपाल जैन द्वारा पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के लिये जयपुर प्रिण्टर्स प्रा. लि., जयपुर से मुद्रित एवं प्रकाशित।
सम्पर्क-सूत्र :
पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट
ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015
फोन :(0141)2705581, 2707458
E-mail : ptstjaipur@yahoo.com
ISSN 2454 - 5163

शुल्क :

आजीवन	:	251 रुपये
वार्षिक	:	25 रुपये
एक प्रति	:	2 रुपये

मुद्रण संख्या :

हिन्दी	:	7100
मराठी	:	2000
कन्नड़	:	1000
कुल	:	10100

अपने निधान को देख तो सही

"ऐसा राग हो तो मुझे लाभ हो और ऐसा निमित्त हो तो मुझे लाभ हो" - इसप्रकार राग के और निमित्त के निकट जाकर जो अपनी प्रभुता मांगता है, वह दीन भिखारी है; उसे प्रभुता कहाँ से मिलेगी?

"दीन भयो प्रभु पद जपै, मुकति कहाँ से होय?"

प्रभुता की शक्ति तो स्वयं में भरी है उसे पहिचानकर उसका भजन-सेवन करे तो प्रभुता प्राप्त हो।

अरे जीव! तेरे स्वभाव में प्रभुता का कल्पवृक्ष लगा है, उसकी छाया में जाकर प्रभुता मांग तो तुझे अवश्य तेरी प्रभुता की प्राप्ति हो। जिस हाथ में कोयला या पत्थर लेकर चिंतवन करे तो कुछ नहीं मिलता; किन्तु चिन्तामणि लेकर चिंतवन करे तो बाह्य वैभव की प्राप्ति होती है, उसी प्रकार शरीर को या रागरूपी कोयले को लेकर चिंतवन करे तो उससे आत्मा की प्रभुता प्राप्त नहीं होती; किन्तु आत्मा का स्वभाव स्वयं चैतन्य-चिन्तामणि है, उस चिन्तामणि का चिंतवन करे तो प्रभुता की प्राप्ति हो अर्थात् मैं ही प्रभुता से परिपूर्ण चैतन्य चिंतामणि हूँ-इसप्रकार अपने आत्मा का चिंतवन करने से आत्मा स्वयं प्रभु हो जाता है।

इसके अतिरिक्त जो अपनी प्रभुता दूसरे के पास से मांगे वह तो दीन होकर चार गतियों में परिभ्रमण करता है, इसलिए आचार्यदेव आत्मा की प्रभुता बतलाते हैं कि अरे जीव! तेरी प्रभुता के निधान तुझे बतला रहे हैं, उन्हें एकबार तो देख! अपने निधान को देख तो सही! अपने स्वभाव की प्रभुता को देखने का कुतूहल-रुचि उमंग करे तो उसे प्रभुता मिले बिना न रहे। ......

- आत्मप्रसिद्धि, पृष्ठ 483-484

वीतराग-विज्ञान

वीतराग-विज्ञान ही, तीन लोक में सार।
वीतराग-विज्ञान का , घर-घर होय प्रसार॥

वर्ष : 39 (वीर नि. संवत् - 2546) 443 अंक : 1

जीवनि के परिणामनि...

जीवनि के परिणामनि की यह अतिविचित्रता देखहु ज्ञानी॥टेक॥
नित्य निगोदमांहितैं कढिकर, नरपरजाय पाय सुखदानी।
समकित लहि अन्तर्मुहूर्त में, केवल पाय वरै शिवरानी॥
जीवनि के परिणामनि... ॥1॥
मुनि एकादश गुणथानक चढि, गिरत तहाँतैं चित भ्रम ठानी।
भ्रमत अर्धपुद्गल प्रावर्तन, किञ्चित् ऊन काल परमानी॥
जीवनि के परिणामनि... ॥2॥
निज परिणामनि की संभाल में, तातैं गाफिल मत ह्वै प्रानी।
बंध मोक्ष परणामनि ही सों, कहत सदा श्री जिनवरवानी॥
जीवनि के परिणामनि... ॥3॥
सकल उपाधि निमित्त भावनि सों, भिन्न सुनिज परिनति को छानी।
ताहि जानि रुचि ठानि होहु थिर, 'भागचंद' यह सीख सयानी॥
जीवनि के परिणामनि... ॥4॥

- कविवर पण्डित भागचन्दजी

आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी के 131वें जन्मदिवस (उपकार दिवस) के अवसर पर –

उपकार दिवस पर ऑनलाइन संगोष्ठी संपन्न

आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी के 131वें जन्मदिवस (उपकार दिवस) के अवसर पर पूज्य श्री कानजीस्वामी स्मारक ट्रस्ट देवलाली द्वारा दिनांक 25 व 26 अप्रैल को 'गुरुदेवश्री का जीवन दर्शन' विषय पर राष्ट्रीय ऑनलाइन संगोष्ठी आयोजित की गई।

दिनांक 25 अप्रैल को सर्वप्रथम अन्तरराष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त विद्वान डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के आशीर्वचन के अतिरिक्त डॉ. शान्तिकुमारजी पाटील जयपुर, डॉ. राकेशजी शास्त्री नागपुर, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर, पण्डित विपिनजी शास्त्री नागपुर, डॉ. मनीषजी शास्त्री मेरठ, पण्डित रजनीभाई दोशी हिम्मतनगर, पण्डित चेतनभाई राजकोट, पण्डित विरागजी शास्त्री जबलपुर, पण्डित अंकुरजी शास्त्री भोपाल ने अपने वक्तव्य प्रस्तुत किये।

गोष्ठी की अध्यक्षता पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली द्वारा एवं मंगलाचरण डॉ. विवेकजी शास्त्री इन्दौर द्वारा किया गया।

दिनांक 26 अप्रैल को ब्र. अभिनन्दनजी शास्त्री देवलाली, ब्र. हेमचंदजी देवलाली, डॉ. वीरसागरजी दिल्ली, पण्डित शैलेषभाई तलोद, पण्डित देवेन्द्रजी बिजौलिया, पण्डित नीलेशभाई शाह मुम्बई, पण्डित ज्ञायकजी शास्त्री मुम्बई, पण्डित राहुलजी शास्त्री मुम्बई एवं पण्डित अभिषेकजी शास्त्री ने अपने मनोभाव व्यक्त किये। इसके अतिरिक्त पण्डित धनसिंहजी ज्ञायक पिड़ावा द्वारा गुरुदेवश्री पर कविता प्रस्तुत की गई।

गोष्ठी की अध्यक्षता डॉ. मनीषजी शास्त्री मेरठ, मंगलाचरण पण्डित राजेन्द्रजी जबलपुर द्वारा एवं प्रासंगिक गीत विरागजी शास्त्री ने प्रस्तुत किया।

गोष्ठी का निर्देशन पण्डित अभयजी शास्त्री देवलाली, संयोजन पण्डित उर्विशजी शास्त्री देवलाली, संचालन पण्डित ज्ञायकजी शास्त्री मुम्बई व पण्डित अनुभवजी शास्त्री खनियांधाना द्वारा किया गया। गोष्ठी के लाइव प्रसारण हेतु समस्त तकनीकी सहायता **JAINEXT** संगठन मुम्बई के सदस्य पण्डित सुदीपजी शास्त्री एवं पण्डित ज्ञायकजी शास्त्री द्वारा उपलब्ध करायी गयी। लगभग 10 हजार साधर्मियों ने इस ऑनलाइन गोष्ठी का लाभ लिया। संगोष्ठी का लाइव प्रसारण पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, जयपुर एवं चैतन्यधाम ट्रस्ट, अहमदाबाद के चैनल द्वारा किया गया।

मोक्षमार्गप्रकाशक व पुरुषार्थसिद्ध्युपाय Live

डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर द्वारा दिनांक 12 मार्च से प्रतिदिन प्रात: 9.20 पर मोक्षमार्गप्रकाशक Live एवं दिनाक 26 मई से रात्रि में 8.00 बजे पुरुषार्थसिद्ध्युपाय ग्रंथ पर Youtube के drsanjeevgodha चैनल पर प्रवचनों का Live प्रसारण नियमित हो रहा है, जिसका लाभ हजारों लोग ले रहे हैं।

सम्पादकीय

भरत का अन्तर्द्वन्द

दूसरा अध्याय

(गतांक से आगे ...)

(दोहा)

प्रातः उठते भरत ने, अन्तर्मुख हो आप।
सबसे पहले ही किया, णमोकार का जाप।। १।।

अन्तर्मुख हो किया फिर, निज आतम का ध्यान।
और चिन्तवन तत्त्व का, करने लगे महान।। २।।

(वीर)

जिनदर्शन जिनपूजन कर श्री जिनवर की स्तुति महान।
वंदन अभिनन्दन करके श्री ऋषभदेव का कर गुणगान।।
परीजनों के साथ भरत ने किया मधुरतम स्वल्पाहार।
और पूर्ण सज्जित होकर फिर पहुँचे भरत राजदरबार।। ३ ।।

पहले से ही भरा हुआ सारा दरबार उपस्थित था।
भरतराज ने पुत्र जन्म के उत्सव का आदेश दिया।।
सभी जनों का मन मानो पहले से ही उद्यत था।
सबकी तैयारी पूरी थी केवल आदेश प्रतीक्षित था।। ४ ।।

आदेश मिला तो सभी लोग पूरे मन से सन्नद्ध हुये।
जुट गये सभी तन से मन से अर सभी उल्लसित जीवन से।।
अरे सजावट की सबने अपने-अपने घर आंगन की।
झिलमिल झिलमिल हो उठा नगर शोभा थी अद्भुत प्रांगण की।। ५ ।।

मधुर गीत-संगीत नृत्य सब घर-घर में आरंभ हुये।
अरे नगर के जन-जन के थे मन अति ही उत्साह भरे॥
राजमहल की दिव्य सजावट अरे देखने लायक थी।
और सभी की भावभंगिमा अति उत्साह विधायक थी॥ ६ ॥

गली-गली में नर किन्नर सब मधुर गीत संगीत भरे।
एक-दूसरे को बधाइयाँ दे देकर उल्लसित हुये॥
उत्साहित होकर चलते सब मानो उनके मन नाच रहे।
रे मंत्र मुग्ध से थे वे सब वे थे अति ही उल्लास भरे॥ ७॥

भरतराज की भावभंगिमा अरे देखने लायक थी।
मन्द मन्द मुस्कान भरत की अति आनन्द-प्रदायक थी॥
सहजभाव से सभी जनों से मिलना-जुलना अनुपम था।
भेदभाव के बिना सभी को गले लगाना अद्भुत था॥ ८॥

निश्चयप्रेमी भरत राज का सद्व्यवहार अलौकिक था।
ज्ञायक के ज्ञाता-दृष्टा का सभ्याचरण अलौकिक था॥
अपने में रमने वाले के लौकिक सम्बन्ध अलौकिक थे।
अपने में जमने वाले के सारे व्यवहार अलौकिक थे॥ ९॥

अपने में हैं या जन-जन में जन-जन की समझ नहीं आता।
उनकी इस अद्भुत लीला को कोई समझ नहीं पाता॥
अरे आत्मा के प्रेमी निज आतम में ही मगन रहें।
साधर्मी भाई-बहिनों से वे प्रेमभाव से मिलें जुलें॥ १०॥

अरे सभी सामान्यजनों को जो चाहा वह दान दिया।
आत्माराधक गुणीजनों को यथायोग्य सन्मान दिया॥

संयमधारी गुरुवर्यों को अनुदिष्ट आहार दिया।
ज्ञानपिपासु मुमुक्षुओं को तुमने आतम ज्ञान दिया॥ ११॥

अरे सभी को याद किया जन्मोत्सव में भरतेश्वर ने।
सभी बन्धुओं को सादर आमंत्रण भेजे थे उनने॥
सब आये सबने मिलजुलकर उत्सव का अति आनन्द लिया।
और सभी ने मिलजुल कर रे एक साथ जलपान किया ॥१२॥

भरतराज राजेश्वर थे युवराज श्री बाहुबलि थे।
अतः बगल में बैठाया बाहुबलि को भरतेश्वर ने॥
और सभी को यथायोग्य सिंहासन पर बैठाया था।
सभी प्रतिष्ठित लोगों को उच्चासन पर बैठाया था॥ १३॥

अरे आज के उत्सव में जो-जो आये थे उन सबका।
यथायोग्य सत्कार और सन्मान किया भरतेश्वर ने॥
और कहा कल चक्ररत्न के स्वागत का उत्सव होगा।
उसमें भी शामिल होकर उसको शोभित करना होगा॥ १४॥

सबसे पहले भरतराज ने आदीश्वर को याद किया।
फिर छोटे भाई वृषभसेन को अति आदर से नमन किया॥
ऋषभदेव से दीक्षा ले वे पहले गणधर देव बने।
शत-शत वन्दन महाभाग्यशाली मुनिवर के चरणों में॥ १५॥

और अनेकों भाई जो-जो दीक्षित हो मुनिराज बने।
आत्मसाधना में तत्पर होकर जो गणधर देव बने॥
उन सबको वन्दन करके अभिनन्दन करते हैं हम सब।
उनके अनुपम इस कारज को सबका सौभाग्य समझते हम॥१६॥

जिन्हें अंक[१] में लेकर जिन[२] ने अंक और अक्षर विद्या।
सिखलाई हों उनकी महिमा अरे कहाँ तक गायें हम।।
उन्हीं ब्राह्मी-सुन्दरी ने आर्या की दीक्षा लेकर।
सौभाग्य बढ़ाया हम सबका रे महामान्यगणनी बनकर।। १७।।

नाभिराय के कुल को ही रे एक और सौभाग्य मिला।
चक्ररत्न ने आकर अपनी सेवाओं का दान दिया।।
छह खण्डों में बटे भरत को वह अखण्ड रूप देगा।
हम सब भी होंगे अखण्ड हम सबका एक देश होगा।। १८।।

अरे करेंगे हम सब मिल इस चक्ररत्न का स्वागत कल।
हम सभी संभालेंगे मिलकर आई जिम्मेवारी हम पर।।
भरतराज के नम्र निवेदन को सुन सब सन्तुष्ट हुये।
और विविधविध चर्चाओं में सभी लोग संलग्न हुये।। १९।।

कोई कहने लगा भरत कितने विनम्र मृदुभाषी हैं।
पुण्योदय से प्राप्त चक्र को वे सबका बतलाते हैं।।
'बना रहे वात्सल्य भाव' – ऐसा व्यवहार निभाते हैं।
'सब रहें साथ में' – वे निशदिन बस यही भावना भाते हैं।। २०।।

हम ऋषभदेव की संतानें सब एक, एक से ही तो हैं।
उनकी जो गौरव गाथा है वह हम सबकी ही गाथा हैं।
जो-जो सत्कार्य हुये हमसे सब उनके हैं सब उनके हैं।
यद्यपि हैं हम सब पृथक्-पृथक्, पर उनके हैं पर उनके हैं।। २१।।

१. गोद २. आदिनाथ

छहढाला प्रवचन

आस्रव भावना

जो योगन की चपलाई, तातैं ह्वै आस्रव भाई।
आस्रव दुखकार घनेरे, बुधिवन्त तिनहें निरवेरे।।९।।

(सुप्रसिद्ध आध्यात्मिक विद्वान पण्डित दौलतरामजीकृत छहढाला की पांचवीं ढाल पर गुरुदेवश्री के प्रवचन पाठकों के लाभार्थ यहाँ प्रस्तुत किये जा रहे हैं।)

(गतांक से आगे....)

हे बुद्धिमान मुमुक्षु ! यदि तुझे संसार का अन्त करना हो और मोक्षमार्ग में लगना हो तो आस्रवों का दुःखदायक स्वरूप जानकर उन्हें छोड़ो। अपने शुद्धस्वभाव का आश्रय ले तो आस्रव सहज छूट जायेंगे।

जिसे चारों गतियों के दुःखों का भय लगे; वही आत्मसन्मुख होकर मोक्षमार्ग में लगता है। मुमुक्षु जीव को शुभराग के फल में मिलनेवाली देवगति में भी सुख नहीं लगता। वह जीव समस्त परभावों से रहित अपने शुद्धात्मा का चिन्तन करके मोक्ष सुख का स्वाद लेता है।

प्रभु ! तेरा आत्मा शान्तरस का समुद्र है, उसमें राग या दुःख की लहरें नहीं उठतीं तथा परपदार्थों से शान्ति नहीं आती। पर के आश्रय से शुभ या अशुभ राग होता है, जो दुःखरूप है, दुःख का कारण है, अतः संसार है। अज्ञानी जीव राग को धर्म का, मोक्ष का और सुख का साधन मानता है, क्योंकि उसे आस्रवों के स्वरूप की खबर नहीं है, इसलिए उसे सच्ची आस्रव भावना नहीं होती। भगवान आत्मा शुभाशुभ राग रूपी वस्त्र रहित है, उसके सहज निर्ग्रन्थ स्वरूप में शुभाशुभ का बोझा नहीं है। इसप्रकार आस्रव भावना द्वारा वैराग्य का जोर बढ़ाकर महाभागी मुनिराज आस्रवों से भिन्न आत्मा

के अनुभव में एकाग्र होते हैं। उन्हें आस्रव निरोधरूप संवर होता है।

देखो ! बुद्धिवंत जीव शुभ आस्रव को भी दु:ख का कारण जानकर उसका निवारण करता है। छहढाला जैसे छोटे ग्रन्थ में भी इतनी स्पष्ट बात लिखी है। पूर्वाचार्यों की परम्परा का अनुसरण करके पण्डित दौलतरामजी ने यह ग्रन्थ लिखा है। "**आस्रव दुखकार घनेरे**" अर्थात् आस्रव बहुत दुखदायी हैं। इसमें पुण्यास्रव भी आ गया है। "**बुधिवन्त तिन्हें निरवेरे**" अर्थात् बुद्धिमान जीव इनका निवारण करते हैं। ज्ञानियों ने उन्हें छोड़ने योग्य समझा, तभी तो उन्हें सम्यग्ज्ञान हुआ और अब वे आस्रवों का सर्वथा अभाव करने के लिए वैराग्य भावनाओं का चिन्तवन करते हैं। हे भाई ! तू भी शुभाशुभ से पार शुद्ध आत्मा को दृष्टि में लेकर ऐसी भावना कर ! तुझे महान आनन्द होगा। ये भावनाएँ वैराग्य उत्पन्न करनेवाली माता हैं।

इसके बाद संवर भावना में कहेंगे – "**जिन पुण्य-पाप नहिं कीना आतम अनुभव चित दीना**" अर्थात् जिसका चित्त आत्मा के अनुभव में लगा है, उसी को संवर होता है, जिसका चित्त राग या पुण्य में लगा है, उसे संवर या सुख नहीं होता। जिसका चित्त चैतन्य में लगता है और राग से हट जाता है, उसे ही संवर और सुख होता है। आत्मा के अनुभव के पहले ही जो पुण्य-पाप दोनों को आस्रवरूप जाने, दु:खरूप जाने, छोड़ने योग्य जाने; वही उनसे पीछे हटकर उनका संवर कर सकता है। जो आस्रव को करने योग्य मानता है, हितरूप मानता है, वह उन्हें क्यों छोड़ेगा ? उसे उनका संवर कैसे होगा ? भाई ! किसी भी प्रकार का राग चाहे शुभ हो या अशुभ, उसमें तुझे दु:ख भासित होना चाहिए, अहित भासित होना चाहिए, ऐसा लगना चाहिए कि इसके निवारण में ही मेरा हित है।

जो आस्रव-बन्ध को संवर-निर्जरा मानता है, उसे इन वैराग्य भावनाओं का सच्चा चिन्तन नहीं होता। आस्रव-बंध तो अनर्थरूप तत्त्व है, उसका फल भी अनर्थरूप अर्थात् दु:खरूप है। पुण्य को भी शास्त्रों में बेड़ी कहा

है, चाहे वह सोने की ही क्यों न हो, वह भी जीव को बांधनेवाली है, दु:ख देनेवाली है, मुक्ति देनेवाली नहीं है। अज्ञानी उसके सेवन में सुख मानकर सन्तुष्ट होता है, उसका तो तत्त्व-चिन्तन ही मिथ्या है। यहाँ तो वस्तुस्वरूप के यथार्थ ज्ञान सहित वैराग्य-चिन्तन की बात है। चैतन्य के अनुभवरूप वीतरागभाव के बिना भवदु:ख से छुटकारा नहीं हो सकता।

लाख बात की बात अर्थात् सभी कथनों का यही सार है कि पुण्य-पाप रूप समस्त कषायभावों से भिन्न चिदानन्दस्वरूप आत्मा को अन्तर में ध्याओ। इसके अतिरिक्त दूसरा कोई उपाय नहीं है। सराग अवस्था में अनेक प्रकार के शुभभाव भी होते हैं; परन्तु वे सब नवीन कर्मबन्ध के कारण हैं, मोक्ष के कारण नहीं हैं – ऐसा यथार्थ ज्ञान करना चाहिए। सच्चा ज्ञान होने पर मोक्षमार्ग चालू होता है। ज्ञानी जीव वस्तुस्वरूप को जानकर स्वभाव भावना के बल से आस्रवों को रोकते हैं। संवररूपी योद्धा बारह भावनाओं के चिन्तनरूपी ढाल से आस्रवों को रोकते हैं। आस्रव भावना में आस्रव करने की भावना नहीं है; परन्तु आस्रव का दु:खदायक स्वरूप जानकर शुद्धस्वरूप के अनुभव द्वारा उनका निवारण करना ही आस्रव भावना का तात्पर्य है।

इसप्रकार आस्रव भावना का वर्णन पूरा हुआ। **(क्रमश:)**

पहले विकल्प सहित दृढ निश्चय तो करे कि राग से, निमित्त से, खण्ड-खण्ड ज्ञान से तथा गुण-गुणी के भेद से भी आत्मा ज्ञात नहीं होता – इसप्रकार पहले निर्णय का दृढ स्तम्भ लगाये! उससे पर की ओर जाता हुआ वीर्य तो वहीं रुक जाता है, भले अभी स्वोन्मुख होना बाकी है....विकल्पयुक्त निर्णय में भी विकल्पयुक्त नहीं हूँ – ऐसा पहले दृढ करे! निर्णय पक्का होने पर राग अपंग हो जाता है, उसकी शक्ति कम हो जाती है। विकल्पयुक्त निर्णय में स्थूल कर्तृत्व छूट जाता है और फिर भीतर स्वानुभव में जाने पर निर्णय सम्यक्रूप होता है।

– द्रव्यदृष्टि जिनेश्वर, पृष्ठ-३२

नियमसार प्रवचन –

जीव स्वयं प्रतिक्रमण ही है

परमपूज्य सर्वश्रेष्ठ दिगम्बराचार्य कुन्दकुन्द के प्रसिद्ध परमागम नियमसार के परमार्थप्रतिक्रमणाधिकार की गाथा ९१ पर हुये आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी के अध्यात्मरस गर्भित प्रवचनों का संक्षिप्त सार यहाँ दिया जा रहा है। गाथा मूलत: इसप्रकार हैं –

मिच्छादंसणणाणचरित्तं चइऊण णिरवसेसेण।
सम्मत्तणाणचरणं जो भावइ सो पडिक्कमणं ॥९१॥

(हरिगीत)

ज्ञानदर्शनचरण मिथ्या पूर्णत: परित्याग कर।
रतनत्रय भावे सदा वह स्वयं ही है प्रतिक्रमण ॥९१॥

मिथ्यादर्शन, मिथ्याज्ञान और मिथ्याचारित्र को पूर्णत: छोड़कर जो सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र को भाता है, वह जीव स्वयं प्रतिक्रमण ही है।

(गतांक से आगे....)

परमार्थप्रतिक्रमण का अर्थ क्या है? पुण्य-पाप से पराङ्मुख होकर आत्मा के स्वभाव में रमणता करना ही सच्चा प्रतिक्रमण है। वह किसके होता है – यह बतलाते हैं।

भगवान अरहन्तदेव ने जो मार्ग कहा है, उससे विपरीत मार्ग की श्रद्धा मिथ्यादर्शन है। सर्वज्ञ भगवान अनादि से जो मार्ग कहते आये हैं, उससे विपरीत मार्ग कहनेवाले भी अनादि से ही हैं, उनकी श्रद्धा मिथ्याश्रद्धा है; उस विपरीत मार्ग में कही हुई अवस्तु में वस्तुबुद्धि करना मिथ्याज्ञान है, और उससे विपरीतमार्ग का आचरण मिथ्याचारित्र है – इन तीनों के त्याग से ही प्रतिक्रमण होता है।

मिथ्याश्रद्धा-ज्ञान-चारित्र को निरवशेषपने छोड़ने को कहा है। सर्वज्ञ के अतिरिक्त अन्य का एक अंश भी सच्चा है – यह मान्यता छोड़ना! छह द्रव्य, उनकी अनन्तगुण-पर्यायें – ऐसा वस्तुस्वरूप सर्वज्ञ के अतिरिक्त

अन्य मार्ग में है ही नहीं। सर्वज्ञ-वीतरागमार्ग की अन्य मार्गों के साथ तीनकाल में भी समानता नहीं है; इसलिये उन मार्गों की श्रद्धा, ज्ञान व चारित्र- तीनों को निरवशेषपने छोड़ना!

अथवा निजकारणपरमात्मा की श्रद्धा-ज्ञान और एकाग्रता से विमुखता मिथ्या श्रद्धा-ज्ञान-चारित्र है, उसे समस्तरूपेण त्यागना चाहिए। एक समय की क्षणिक पर्याय को ही सम्पूर्ण आत्मा मानना त्रिकाली तत्त्व की श्रद्धा से विमुखपना है, अतः मिथ्याश्रद्धा है। शरीरादि तो पर हैं और एक समय की प्रगट ज्ञानादि की पर्याय भी आत्मा को पूर्णस्वरूप नहीं है, उसे ही पूर्णात्मा मान लेना पर्यायबुद्धि है- मिथ्या-श्रद्धा है। त्रिकाली अखण्ड ज्ञायकमूर्ति आत्मा की श्रद्धा करके, उस मिथ्याश्रद्धा को छोड़ना चाहिये। त्रिकाली अखण्ड आत्मा के अतिरिक्त अपूर्णज्ञान को, अपूर्णदशा को आत्मा जानना मिथ्याज्ञान है।

एक समय की मति-श्रुतादि पर्याय की बुद्धि रखना और त्रिकालीस्वभाव की बुद्धि छोड़ना ही मिथ्या श्रद्धा-ज्ञान कहा जाता है। इस मिथ्यात्व को अवश्य छोड़ना चाहिये।

प्रथम तो सर्वज्ञदेव के मार्ग से विपरीत मार्ग की श्रद्धा-ज्ञान एकाग्रता को छोड़ने के लिए कहा और अब आत्मा के स्वभाव से विपरीत – ऐसे मिथ्या श्रद्धा-ज्ञान-चारित्र को छोड़ने के लिये कहते हैं। इस जीव ने चैतन्य-स्वभाव से विपरीत श्रद्धा-ज्ञान-चारित्र की भावना अनन्त बार भायी है; किन्तु चैतन्यस्वभाव के सन्मुख होकर उसके श्रद्धा-ज्ञान-चारित्र को कभी नहीं भाया, इसलिये कहते हैं कि चैतन्य से विमुख – ऐसे मिथ्या श्रद्धान-ज्ञान-चारित्र को समस्तपने छोड़ना। यदि एक समय भी दृष्टि में त्रिकाली स्वभाव की मुख्यता छूटकर पर्याय की मुख्यता हो जाय तो मिथ्यात्व हो जाता है। वर्तमान पर्याय को सर्वस्व मानना, चैतन्यस्वभाव से विमुखता है और वही मिथ्या श्रद्धा-ज्ञान-चारित्र है, उसे सर्वप्रकार से छोड़ना चाहिये। यहाँ प्रतिक्रमण बतलाना है, इसलिये उसे छोड़ने की बात

की है। वास्तव में तो त्रिकाली चैतन्यस्वभाव के सन्मुख होकर, उसकी श्रद्धा-ज्ञान-रमणता करने पर मिथ्या श्रद्धान-ज्ञान-चारित्र छूट जाता है। भाई! पर्याय को अन्तर्मुख अभेद न करके निमित्त और संयोग के आश्रय से लाभ मानना उचित नहीं है।

मिथ्याश्रद्धान-ज्ञान-चारित्र को छोड़ने की बात की, अब क्या करना? अर्थात् किसका श्रद्धा-ज्ञान-चारित्र करना? अतः अस्तिपक्ष से बतलाते हैं। आत्मा की श्रद्धा-ज्ञान-चारित्र करने से किस प्रकार सम्यग्दर्शन -ज्ञान-चारित्र प्रगट होता है, वह कहते हैं।

''त्रिकाली निरावरण नित्य आनन्द जिसका एक लक्षण है - ऐसा निरंजन निज परमपारिणामिकभावस्वरूप कारणपरमात्मा, वह आत्मा है; उसके स्वरूप के श्रद्धान-ज्ञान-आचरण का रूप, वह वास्तव में निश्चय-रत्नत्रय हैं।''

पर्याय में आवरण है; किन्तु त्रिकाली निजपरमात्मस्वरूप में आवरण नहीं है। मेरा आत्मस्वभाव तो त्रिकाल निरावरण है और नित्य आनन्द ही उसका लक्षण है। जिसमें आनन्द नहीं था और प्रगट हुआ, वह तो पर्याय है; किन्तु मेरा स्वभाव तो त्रिकाल आनन्द लक्षण से भरपूर है - इसप्रकार अपने आत्मा की जो श्रद्धा करे, उसे सम्यग्दर्शन होकर मिथ्यात्व का प्रतिक्रमण होता है। ऐसे आत्मा की श्रद्धा के बिना मिथ्यात्व का प्रतिक्रमण नहीं होता। त्रिकाली आनन्दस्वरूप आत्मा है, उसमें आनन्द की हीनता अथवा अधिकता नहीं होती, वह तो त्रिकाल एकरूप आनन्द लक्षण है। सदा आनन्दमय निज परमपारिणामिकभावस्वरूप कारणपरमात्मा मेरा आत्मा है - ऐसे आत्मा का श्रद्धान-ज्ञान करके, उसमें एकाग्रता करना निश्चय-रत्नत्रय है।

आत्मा कहा ही उसे है जो त्रिकाल एकरूप परमस्वभाव से भरपूर कारणपरमात्मा है। सिद्धपद के इच्छुक जीवों को सिद्धरूपी कार्य का कारण, इस आत्मा में ही उपलब्ध है; इसीलिये उसे कारणपरमात्मा कहते

हैं। उसी के आश्रय से सिद्धदशारूपी कार्य आयेगा, कहीं बाहर से वह कार्य आनेवाला नहीं है। प्रतिसमय जो नवीन पर्याय आती है, वह कहाँ से आती है? पर में से नहीं आती और पर्याय में से भी पर्याय नहीं आती; ध्रुवकारणपरमात्मा में से नई-नई अवस्थायें आती हैं - ऐसे कारणपरमात्मा की प्रतीति, ज्ञान और एकाग्रता ही निश्चयरत्नत्रय है और ऐसे रत्नत्रयधारी मुनिराजों को ही परमार्थप्रतिक्रमण होता है।

क्षायिकभाव जितना भी आत्मा नहीं, क्षायिकभाव तो पर्याय है, उसमें से नई पर्याय नहीं आती। नित्यानन्द जिसका लक्षण है - ऐसा भगवान कारणपरमात्मा है और वही आत्मा है। वह नित्यानन्दलक्षण से ही लक्षित होता है, क्षणिक पर्याय से लक्षित नहीं होता लक्षण और लक्ष्य - दोनों ही ध्रुव हैं। आनन्दलक्षण द्वारा लक्ष्य का निर्णय करनेवाली तो पर्याय है; परन्तु लक्षण तो नित्यानन्द और ध्रुव है। लक्ष्य और लक्षण - दोनों नित्य ध्रुव हैं; इसप्रकार दोनों का अभेद लिया है। पर्याय को लक्षण नहीं कहा; किन्तु ध्रुव आनन्द को ही लक्षण कहा है। ऐसे नित्यानन्दलक्षण से ध्रुव आत्मा को जिसने लक्ष्य में लिया, वह पर्याय स्वयं मोक्षमार्ग है; परन्तु उस एक समय की पर्याय को हम पूर्ण आत्मा नहीं कहते। आत्मा तो त्रिकाल एकरूप निरावरण है, उस वस्तुस्वभाव पर कभी आवरण नहीं है। निगोद दशा में भी वस्तुस्वभाव तो निरावरण ही है। यदि नित्यवस्तु भी आवरणित हो जाय तो वस्तु का ही अभाव हो जाय। आवरण तो क्षणिक पर्याय में है और वह पर्याय बदल जाती है। आवरणवाली वस्तु त्रिकाली नहीं होती।

जैसे क्षणिक पर्याय में आवरण है तो उस पर्याय में निर्मलता का अभाव है, वैसे ही यदि त्रिकाली वस्तुस्वभाव में भी आवरण हो तो उस त्रिकाल शुद्धस्वभाव का भी अभाव हो जाय; अतः ध्रुव आत्मा तो त्रिकाल निरावरण ही है - ऐसे त्रिकाली निरावरण कारण-परमात्मा के सन्मुख होकर उसकी श्रद्धा-ज्ञान-एकाग्रता करना ही निश्चयरत्नत्रय है और वही मोक्षमार्ग है। **(क्रमशः)**

समयसार की 47 शक्तियों पर प्रवचन

वीर्य शक्ति

आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी द्वारा समयसार की 47 शक्तियों पर किये गये प्रवचनों को यहाँ पाठकों के लाभार्थ क्रमशः प्रकाशित किया जा रहा है।

(गतांक से आगे....)

आहाहा....! अपने स्वरूप की रचना करनेवाले वीर्यशक्ति के धारक आत्मा को जो नहीं देखता और पुण्य-पाप की रचना करनेवाले को ही आत्मा मानता है; वह मिथ्यादृष्टि है/अज्ञानी है और उसे निरन्तर पुण्य-पाप के भावों की ही रचना हुआ करती है।

भाई! ये बारह व्रतों और पंच महाव्रतों का जो राग होता है, वह सब अचेतन है - आत्मा नहीं है।

अरे! जिस भाव से तीर्थंकर नामकर्म नाम का बंध होता है, वह भी अचेतन है/जड़ है, आत्मा नहीं; आत्मा की वीर्यशक्ति का कार्य भी नहीं।

रागभाव चाहे जितना मंद हो तो भी वह बंधभाव ही है, शुद्धचैतन्यस्वरूप से विरुद्ध जाति का ही है। उसमें चैतन्यप्रकाश का अंश नहीं है। वह अपने को भी नहीं जानता और चैतन्यस्वरूप आत्मा को भी नहीं जानता, इसलिए वह अचेतन है।

अहो! ऐसा अपूर्व मार्ग हमारे लिए दिगम्बर संतों ने सूर्यप्रकाश के समान स्पष्ट खोलकर रख दिया है।

यह स्त्री-पुरुष का शरीर तो हाड़-मांस और चमड़ी से बना हुआ है, वह आत्मा नहीं है और जो इसे करता है अर्थात् जिससे इसकी रचना हुई है, वह भी आत्मा नहीं है।

अन्दर में जो पुण्य-पाप के भाव होते हैं, वे भी आत्मा नहीं हैं और उनके होने में जो कारण बनते हैं, वे भी आत्मा नहीं हैं; क्योंकि वे सभी तो अचेतन जड़ तत्त्व हैं और भगवान आत्मा अकेला चेतन-प्रकाश का पुंज है।

जिसके अनुभव द्वारा पर्याय में निर्मल रत्नत्रय की रचना होती है, उसे आत्मा का वीर्य अर्थात् आत्मा कहते हैं। शेष समस्त राग और विकार की रचना करनेवाले कारणों को आत्मा का वीर्य नहीं कहते। उसे तो नपुंसकता कहते हैं, क्योंकि उससे धर्मरूप संतान की उत्पत्ति नहीं होती। **समयसार गाथा १५४ की टीका में आचार्यदेव ने ऐसे जीवों को क्लीब (नपुंसक) कहा है।**

हे प्रभु! तू स्वभाव से भगवान होकर भी भिखारी की भाँति पामर बनकर संसार में रखड़ रहा है। तू तो तीन लोक का नाथ चैतन्यस्वरूप प्रभु है। तेरे गर्भ में अनन्तज्ञान, अनन्तदर्शन, अनन्तसुख, अनन्तवीर्य, सर्वज्ञत्व, सर्वदर्शित्व आदि अनन्त निर्मल पर्यायें भरी पड़ी हैं।

तू पर्याय में उन्हें उत्पन्न न करे और पुण्य-पाप/मलिनता को उत्पन्न करे तो इसमें तेरी शोभा नहीं है। अतः अब तो त्रिकाली द्रव्यस्वभाव का लक्ष्य करके स्वरूपसन्मुख होकर **इसी पर्याय में ज्ञान और आनन्द का प्रसव कर! - ऐसी वीतरागी सर्वज्ञ परमेश्वर की आज्ञा है।**

भाई! आज जगत में सत् सुनने को भी नहीं मिलता, इसीलिए बिचारे क्या करें? अतः वे तो दया-दान-व्रत-तप आदि क्रियायें और शरीर की क्रियायें करने को ही अपना कर्तव्य मानकर मिथ्या मान्यता के सेवन से चार गति में रखड़-रखड़ कर मरते हैं। पर इसमें अन्य कोई क्या करें? मिथ्या मान्यता के सेवन का तो यही फल है। **(क्रमशः)**

ज्ञान गोष्ठी

सायंकालीन तत्त्वचर्चा के समय विभिन्न मुमुक्षुओं द्वारा पूज्य स्वामीजी से पूछे गये प्रश्न और स्वामीजी द्वारा दिये गये उत्तर

प्रश्न : महाव्रत के भाव भले ही बन्ध के कारण हों; परन्तु मुनिराज के वे सहज आते हैं, फिर उनका निषेध कैसे ?

उत्तर : महाव्रत के भाव मुनिराज को भले ही सहज आते हों, तथापि वे निषेधने योग्य ही हैं।

प्रश्न : महाव्रत तो महापुरुष पालन करते हैं, इसीलिए उन्हें महाव्रत कहते हैं, उनका निषेध कैसे होगा ?

उत्तर : महापुरुष अन्तरस्वरूप में स्थिर हुए हैं, उसके साथ व्रत के परिणाम आते हैं, इसलिए उन्हें महाव्रत कहते हैं, परन्तु हैं तो वे बन्ध के ही कारण; अत: उनका निषेध किया गया है।

प्रश्न : मुनिपने में व्रत-तप-शीलादि आचरण करना कहा है। जो कर सकते हैं, उसे तो बन्धनरूप और संसार का कारण कहा, तो फिर मुनियों को शरण किसका रहा ? मुनिपना किसके आश्रय पलेगा ?

उत्तर : व्रत-तप-शीलादि शुभाचरणरूप कर्म का निषेध करते हुये, निष्कर्म अवस्थारूप प्रवर्त्तते हुए, मुनि कहीं अशरणरूप नहीं हैं; ज्ञानस्वरूप में आचरण करने वाले मुनि को ज्ञान ही शरणरूप है। ज्ञान का शरण लेते हुए मुनिराज परम अमृत का आस्वादन करते हैं, अत: शुभाचरण के निषेधक मुनियों को ज्ञान ही परम शरणरूप है।

प्रश्न : श्री कुन्दकुन्दाचार्यदेव ने भी तो महाव्रतों को पाला था ?

उत्तर : श्री कुन्दकुन्दाचार्यदेव ने महाव्रतों को पाला नहीं था, किन्तु महाव्रतों के विकल्प आये थे, उन्हें जाना था। उन विकल्पों का उनके स्वामित्व नहीं था, वे उन्हें अपनत्वपने जानते नहीं थे, मात्र परज्ञेयपने जानते थे।

समाचार दर्शन -

लॉकडाउन के समय देशभर में –

ऑनलाइन शिविरों व कक्षाओं की धूम

ऑनलाइन विद्वत्संगोष्ठी (भरत का अन्तर्द्वन्द)

दिनांक 28 व 29 अप्रैल को **'भरत का अन्तर्द्वन्द'** विषय पर ऑनलाइन विद्वत्संगोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसकी अध्यक्षता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल ने की। मुख्य अतिथि के रूप में श्री अतुलभाई खारा अमेरिका, श्री अशोकजी बड़जात्या इन्दौर, श्री अशोकजी पाटनी सिंगापुर, श्री संजयजी दीवान सूरत आदि महानुभाव उपस्थित थे।

गोष्ठी के अन्तर्गत **भरतजी का श्रावक धर्म** विषय पर ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना ने, **भरत का अन्तर्द्वन्द में समागत जिनेन्द्र भक्ति** विषय पर पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली ने, **भरत का अन्तर्द्वन्द काव्य में समागत प्रमुख सिद्धांत** विषय पर डॉ. शान्तिकुमारजी पाटील जयपुर ने, **दिग्विजय यात्रा का वर्णन** विषय पर डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर ने, **भरत का अन्तर्द्वन्द काव्य का सामाजिक व राजनैतिक वैशिष्ट्य** विषय पर डॉ. वीरसागरजी शास्त्री दिल्ली ने, **भरतजी के सम्बन्ध में प्रचलित भ्रांतियाँ और निराकरण** विषय पर पण्डित राकेशजी शास्त्री नागपुर ने, **भरत का अन्तर्द्वन्द काव्य का साहित्यिक वैशिष्ट्य** विषय पर डॉ. संजयजी शास्त्री दौसा ने, **भरतजी घर में ही वैरागी कैसे?** विषय पर पण्डित परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल जयपुर ने, **भरत-बाहुबली में भ्रातृ स्नेह** विषय पर पण्डित शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने, **भरत का अन्तर्द्वन्द के मार्मिक स्थल** विषय पर पण्डित पीयूषजी शास्त्री जयपुर ने, **डॉ. भारिल्ल के भरत का व्यक्तित्व** विषय पर पण्डित अच्युतकांतजी शास्त्री जयपुर ने अपने विचार रखे।

गोष्ठी का मंगलाचरण डॉ. गौरव सौगानी व श्रीमती परिणति जैन, संयोजन डॉ. शांतिकुमारजी पाटील एवं संचालन अच्युतकांतजी शास्त्री व जिनेन्द्रजी शास्त्री ने किया।

तत्त्वोपदेश शिविर संपन्न

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, केवलज्ञान टी.वी., पंच बालयति जिनालय साधना नगर एवं **YJP (Young Jain Professionals)** के आयोजकत्व में दिनांक 1 से 3 मई तक ऑनलाइन तत्त्व-उपदेश शिविर आयोजित किया गया, जिसके अन्तर्गत डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल, पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर, डॉ. मनीषजी शास्त्री मेरठ, पण्डित पीयूषजी शास्त्री जयपुर, पण्डित स्वानुभवजी शास्त्री अहमदाबाद, पण्डित सौरभजी शास्त्री इन्दौर आदि विद्वानों के व्याख्यानों का लाभ मिला। शिविर में 15 देशों व भारत के विभिन्न नगरों से लगभग 30 हजार साधर्मियों ने लाभ लिया। शिविर का संयाजन व संचालन पण्डित सौरभ-गौरवजी शास्त्री इन्दौर ने किया।

विश्वविख्यात विद्वान डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल का जन्मदिन –

संकल्प दिवस मनाया

विश्वविख्यात विद्वान डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के जन्मदिन 25 मई को प्रतिवर्ष 'संकल्प दिवस' के रूप में मनाया जाता है। इस प्रसंग पर प्रात: 9 बजे ऑनलाइन पूजन के पश्चात् आयोजित ऑनलाइन सभा के अध्यक्ष श्री प्रेमचंदजी बजाज कोटा थे। मुख्य अतिथि श्री प्रदीपजी चौधरी किशनगढ एवं विशिष्ट अतिथि श्री अजितप्रसादजी जैन दिल्ली रहे।

इस अवसर पर पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा, डॉ. महावीरप्रसादजी शास्त्री, पण्डित पीयूषजी शास्त्री, पण्डित जिनकुमारजी शास्त्री एवं डॉ. सीमा जैन उदयपुर ने अपने मनोभाव व्यक्त किये। इसके अतिरिक्त देश के विभिन्न विद्वत्गणों व श्रेष्ठियों ने भी वीडियो के माध्यम से अपनी भावाभिव्यक्ति की। तत्पश्चात् डॉ. शांतिकुमारजी पाटील ने अपने उद्बोधन के पश्चात् सभी विद्वानों व साधर्मियों को आजीवन तत्त्वप्रचार करने का संकल्प दिलाया। कार्यक्रम में ऑनलाइन उपस्थित अतिथियों के वक्तव्य के उपरांत अंत में डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल ने प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा कि अभी तक तो शास्त्री विद्वानों को ही तत्त्वप्रचार का संकल्प दिलाया जाता था, परन्तु इस वर्ष विद्वानों के साथ-साथ श्रेष्ठीवर्ग एवं साधर्मियों ने भी आत्मकल्याण एवं तत्त्वप्रचार का संकल्प ग्रहण किया है।

यह पहला प्रसंग था, जब बड़े दादा इस अवसर पर उपस्थित नहीं थे, अत: परिवार की ओर से श्रीमती कमलाबाई भारिल्ल ने एवं स्नातक परिषद की ओर से डॉ. शांतिकुमारजी पाटील ने माल्यार्पण एवं तिलक द्वारा छोटे दादा का सम्मान किया। कार्यक्रम का मंगलाचरण पण्डित विवेकजी शास्त्री इन्दौर एवं संचालन डॉ. जिनेन्द्रजी शास्त्री उदयपुर ने किया।

● 25 मई को सायंकाल टोडरमल महाविद्यालय के वर्तमान विद्यार्थियों द्वारा संकल्प दिवस कार्यक्रम का आयोजन डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के सान्निध्य एवं डॉ. शांतिकुमारजी पाटील की अध्यक्षता में किया गया।

इस अवसर पर अंकुर जैन खड़ैरी ने **गुरु की दृष्टि में डॉ. भारिल्ल** विषय पर, दुर्लभ जैन गुढाचन्द्रजी ने **रचनाओं के दर्पण में डॉ. भारिल्ल** विषय पर, आप्तअनुशील जैन दमोह ने **वस्तुस्वरूप का यथार्थ प्रतिपादक क्रमबद्धपर्याय और डॉ. भारिल्ल** विषय पर, विनय जैन मुम्बई ने **धर्म के तार्किक व्याख्याता : डॉ. भारिल्ल** विषय पर, अंकित जैन भगवां ने **भरत हृदय कमल भ्रमर : डॉ. भारिल्ल** विषय पर, पवित्र जैन आगरा ने **शोध-प्रबंध के दर्पण में डॉ. भारिल्ल** विषय पर एवं समर्थ जैन विदिशा ने **आपके कुशल निर्देशन में...** विषय पर अपने मनोभाव व्यक्त किये। इसके अतिरिक्त मयंक जैन बण्डा एवं संयम जैन मड़देवरा द्वारा कविता पाठ किया गया। इसी प्रसंग पर उपाध्याय वरिष्ठ द्वारा निर्मित एक वीडियो का प्रसारण हुआ।

अंत में अध्यक्षीय उद्बोधन के पश्चात् डॉ. भारिल्ल के मार्मिक उद्बोधन का लाभ मिला।

मंगलाचरण आयुष जैन पिपरिया एवं संचालन अखिल जैन मण्डीदीप ने किया।

स्पेशल सेमिनार फॉर यूथ संपन्न

ऑनलाइन कक्षाओं के क्रम में बेसिक स्वाध्याय ग्रुप दादर-मुम्बई के तत्त्वावधान में दिनांक 14 अप्रैल से 31 मई तक स्पेशल सेमिनार फॉर यूथ का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर प्रतिदिन पण्डित राजेन्द्रकुमारजी जबलपुर एवं डॉ. महावीरप्रसादजी शास्त्री उदयपुर का लाभ प्राप्त हुआ। इसके अतिरिक्त डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर, पण्डित रजनीभाई दोशी हिम्मतनगर, पण्डित शैलेषभाई तलोद, पण्डित परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल, पण्डित शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल, पण्डित सुनीलजी जैनापुरे राजकोट, पण्डित धर्मेन्द्रजी शास्त्री कोटा, ब्र. श्रेणिकजी जबलपुर, पण्डित तपिशजी शास्त्री उदयपुर, पण्डित निखिलजी शास्त्री मुम्बई, पण्डित सोमिलभाई विलेपार्ले, पण्डित जिनकुमारजी शास्त्री जयपुर, पण्डित ज्ञायकजी शास्त्री मुम्बई, पण्डित राहुलजी शास्त्री मुम्बई, पण्डित जितेन्द्रजी शास्त्री मुम्बई, पण्डित जिनेशजी शेठ मुम्बई, पण्डित अनेकान्तजी भारिल्ल, पण्डित सर्वज्ञजी भारिल्ल जयपुर, पण्डित अभिषेकजी शास्त्री मुम्बई, पण्डित अनुभवजी शास्त्री खनियांधाना, पण्डित प्रतीकजी शास्त्री विदिशा, पण्डित समर्थजी शास्त्री विदिशा, पण्डित चेतनजी शास्त्री कोटा, पण्डित विवेकजी मलाड, पण्डित बृजलालजी टोकर, पण्डित विनीतजी शास्त्री मुम्बई, मंगलार्थी सुलभ जैन झांसी, मंगलार्थी अनुभवजी जबलपुर का भी लाभ प्राप्त हुआ।

कार्यक्रम का प्रसारण ज़ूम एप एवं यूट्यूब के माध्यम से किया गया।

कोरोना की घड़ी में जैनधर्म- गोष्ठी संपन्न

अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन उदयपुर के तत्त्वावधान में दिनांक 8 मई को 'कोरोना की घड़ी में जैनधर्म' विषय पर ऑनलाइन गोष्ठी का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर मुख्य वक्ता के रूप में अन्तरराष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त विद्वान डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल उपस्थित थे। इसके अतिरिक्त श्री अगम जैन (ए.एस.पी.-जबलपुर), श्री संजय वासु (ए.डी.एम.-सिटी उदयपुर), पण्डित राजकुमारजी शास्त्री उदयपुर, डॉ. महावीरप्रसादजी शास्त्री उदयपुर, श्री अजितजी जैन बड़ौदा, डॉ. जिनेन्द्रजी शास्त्री उदयपुर, पण्डित ऋषभजी शास्त्री, डॉ. अंकित जैन आदि के वक्तव्य का भी लाभ मिला।

कार्यक्रम का प्रसारण यूट्यूब के माध्यम से हुआ।

... और तत्त्वनिर्णय न करने में किसी कर्म का दोष है नहीं, तेरा ही दोष है; परन्तु तू स्वयं तो महन्त रहना चाहता है और अपना दोष कर्मादिक को लगाता है, सो जिनआज्ञा माने तो ऐसी अनीति सम्भव नहीं है। **– मोक्षमार्गप्रकाशक, पृष्ठ 311**

अन्तरराष्ट्रीय अर्हं जैन ई-ग्रुप महाशिविर संपन्न

पण्डित टोडरमलजी के 300वीं जन्म जयंती वर्ष के उपलक्ष्य में पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट एवं मुमुक्षु आश्रम ट्रस्ट कोटा के संयुक्त तत्त्वावधान में अर्हं पाठशाला द्वारा दिनांक 10 से 17 मई तक 'जैन ई-ग्रुप शिविर' का आयोजन किया गया।

दिनांक 10 मई को अन्तरराष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त विद्वान डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल की अध्यक्षता में भव्य उद्घाटन समारोह संपन्न हुआ, जिसमें श्री अतुलभाई खारा अमेरिका, श्री प्रेमचंदजी बजाज कोटा, श्री संजयजी दीवान सूरत, श्री राहुलजी गंगवाल जयपुर, श्री विपुलभाई मोटानी मुम्बई के अतिरिक्त विद्वत्वर्ग में ब्र. यशपालजी जैन, डॉ. शांतिकुमारजी पाटील जयपुर, पण्डित परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल जयपुर, पण्डित शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल जयपुर, पण्डित विरागजी शास्त्री जबलपुर, पण्डित पीयूषजी शास्त्री जयपुर, पण्डित धर्मेन्द्रजी शास्त्री कोटा, पण्डित विपिनजी शास्त्री नागपुर आदि महानुभाव उपस्थित थे। सभा का संचालन डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर ने किया।

शिविर में प्रात:काल जिनेन्द्र-पूजन एवं कक्षाएं, दोपहर में पाठ्यक्रम की कक्षाएं, सायंकाल जिनेन्द्र-भक्ति व सामूहिक कक्षाएं तथा रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया, जिसके अन्तर्गत मुख्यरूप से अर्हं जैन क्विज़ का आयोजन किया गया।

सायंकालीन सामूहिक कक्षाओं में डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल, पण्डित परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल, पण्डित शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा, पण्डित विरागजी शास्त्री, पण्डित विपिनजी शास्त्री नागपुर आदि विद्वानों का लाभ प्राप्त हुआ।

इस अवसर पर पण्डित टोडरमलजी पर आधारित कक्षाओं का भी आयोजन हुआ, जिसमें सायंकालीन कार्यक्रम में पण्डित संजयजी जेवर द्वारा अपने मधुरकण्ठ से पण्डित टोडरमलजी की कथा का लाभ प्राप्त हुआ।

शिविर में सामूहिक कक्षा में भक्ष्य-अभक्ष्य, हमारा गौरव-हमारा इतिहास, पापी सुखी धर्मात्मा दु:खी क्यों?, दान और चतुर्विध संघ, जैनदर्शन के अध्ययन की आवश्यकता, बालकों में धार्मिक शिक्षण का महत्व व उपयोगिता, क्या धर्म की आवश्यकता है?, मन की बात-बच्चों के साथ एवं अनेक रोचक विषय जैसे- पंच परमेष्ठी, जीव-अजीव, सात तत्त्व संबंधी भूल, तीर्थंकर भगवान, गतियाँ, द्रव्य, अनुयोग, महामना पण्डित टोडरमलजी आदि अनेक विषयों को समझाया गया।

इस अवसर पर भारत के अतिरिक्त अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया, यू.के., यू.ए.ई., केन्या सहित सम्पूर्ण विश्व के 25 देशों से 13126 विद्यार्थियों ने हिस्सा लेकर एक नया इतिहास रच दिया। आठ दिवसीय शिक्षण शिविर में शिक्षण कार्य के साथ विविध ज्ञानवर्धक, सांस्कृतिक व साहित्यिक कार्यक्रमों में हजारों विद्यार्थियों ने हिस्सा लेकर सभी का मन जीत लिया। इसके अन्तर्गत 'कौन बनेगा धर्म शिरोमणि', 'आप क्या सोचते हैं', 'अर्हं बोड मास', 'हमारे तीर्थंकर' आदि विभिन्न प्रतियोगिताओं के माध्यम से बच्चों ने भारतीय प्रतीक चिह्न एवं कथाओं का

ज्ञान प्राप्त किया। 'अतीत के झरोखे' के माध्यम से महापुरुषों की यादें ताजा कीं, 'ई-शिविर ब्रेकिंग न्यूज', 'जैनधर्म की जय-जयकार', आई एम अर्हं आदि प्रतियोगिताओं का भी आयोजन हुआ। कण्ठपाठ प्रतियोगिता द्वारा विषयों को बच्चों के कण्ठ में पहुंचाया गया तथा अर्हं जैन क्विज़ ने सभी की दिनभर की थकावट को दूर कर दिया।

दिनांक 16 मई को हजारों साधर्मियों ने ऑनलाइन परीक्षा दी, जिसमें सभी का उत्साह देखते ही बन रहा था।

दिनांक 18 मई को सायंकाल भव्य समापन व पुरस्कार वितरण समारोह डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के कुलाधिपतित्व में तथा डॉ. शांतिकुमारजी पाटील की अध्यक्षता में आयोजित किया गया, जिसमें श्री अनंतभाई शेठ मुम्बई, श्री अशोकजी बड़जात्या इन्दौर, श्री अजितप्रसादजी दिल्ली, श्री अमृतभाई मेहता अहमदाबाद, श्री प्रेमचंदजी बजाज कोटा, श्री प्रदीपजी चौधरी किशनगढ, श्री राहुलजी गंगवाल जयपुर, श्री सुशीलजी बजाज कोलकाता, श्री अनंतजी पाटनी अमेरिका एवं टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री सुशीलजी गोदिका जयपुर ने अपने उद्‌गार व्यक्त किये।

डॉ. भारिल्ल ने कहा कि संस्कार बिना सभी सुविधाएं पतनका कारण होती हैं, अत: बच्चों को सम्पत्ति देने के पहले अच्छे संस्कार दो। यह शिक्षण शिविर नयी पीढी में सस्कारों के बीजारोपण के मुख्य उद्देश्य से लगाया गया था, जो ऐतिहासिक रहा, जिसमें पूरे विश्व ने जैनदर्शन के साथ भारतीय श्रमण संस्कृति व अहिंसा का पाठ पढा और आत्मा से परमात्मा बनने का मार्ग जाना।

सभा के अध्यक्ष डॉ. शांतिकुमारजी पाटील ने कहा कि आज के संस्कारित बच्चे भविष्य के भगवान हैं तथा ये ही संस्कार बच्चे में रहें तो इसमें कोई दो राय नहीं कि भावी इतिहास हमारा है।

सभा का संचालन पण्डित पीयूषजी शास्त्री जयपुर ने किया।

संपूर्ण शिविर डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के आशीर्वाद, पण्डित परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल, डॉ. शांतिकुमारजी पाटील के मार्गदर्शन, पण्डित शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा के निर्देशन तथा पण्डित पीयूषजी शास्त्री, पण्डित विरागजी शास्त्री, पण्डित धर्मेन्द्रजी शास्त्री, पण्डित विपिनजी शास्त्री नागपुर के सह-निर्देशन में संपन्न हुआ।

शिविर को सफल बनाने में पण्डित ज्ञायकजी शास्त्री, पण्डित विवेकजी शास्त्री, पण्डित सुदीपजी शास्त्री, विदुषी प्रतीति मोदी, पण्डित जिनकुमारजी शास्त्री, पण्डित अर्पितजी शास्त्री, पण्डित जिनेन्द्रजी शास्त्री, पण्डित समकितजी शास्त्री, पण्डित अनुभवजी शास्त्री, पण्डित विनीतजी शास्त्री, पण्डित आकाशजी शास्त्री हलाज के साथ-साथ 300 युवा विद्वानों ने अपनी कुशल सेवाएं देकर जिनशासन की पताका को नभ मण्डल पर फहरा दिया।

शिविर के समस्त कार्यक्रम ज़ूम एप तथा पण्डित टोडरमल स्मारक के यूट्यूब चैनल पर प्रसारित किये गये, जिन्हें लगभग 3-4 लाख साधर्मियों ने देखा।

- आकाश शास्त्री, अमायन (को-ऑर्डिनेटर - अर्हं पाठशाला)

महाविद्यालय की ऑनलाइन गोष्ठियाँ

* 1. श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय, जयपुर के तत्त्वावधान में दिनांक 19 अप्रैल को **'लघु जैन सिद्धांत प्रवेशिका'** विषय पर ऑनलाइन गोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसकी अध्यक्षता डॉ. शान्तिकुमारजी पाटील ने की। कार्यक्रम में पण्डित परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल, पण्डित शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल एवं पण्डित अच्युतकांतजी शास्त्री भी उपस्थित थे।

गोष्ठी के अन्तर्गत **'जैन सिद्धांत प्रवेशिका के सृष्टा का परिचय'** विषय पर स्वानुभव शास्त्री खनियांधाना ने, **'क्या युनिवर्स ही विश्व है?'** विषय पर शाश्वत जैन भोपाल ने, **'द्रव्य मात्र छः ही क्यों? कम या ज्यादा क्यों नहीं'?** विषय पर संयम जैन दिल्ली ने, **'द्रव्यों के अनंत गुणों का मिनटों में परिचय'** विषय पर संभव जैन दिल्ली ने, **'एक समय की पर्याय कैसी होती है'** विषय पर निखिल जैन फिरोजाबाद ने, **'आखिर द्रव्य-गुण-पर्याय जानने से लाभ क्या है'** विषय पर मयंक जैन बण्डा ने अपना वक्तव्य प्रस्तुत किया।

गोष्ठी का मंगलाचरण सहज शास्त्री पिड़ावा ने एवं संचालन समर्थ शास्त्री विदिशा व विनय शास्त्री मुम्बई ने किया। गोष्ठी के ऑनलाईन तकनीकी सहयोगी पण्डित आकाशजी शास्त्री हलाज एवं निवेदक दुर्लभ जैन गुढाचन्द्रजी व अंकित जैन भगवां रहे।

* 2. दिनांक 30 अप्रैल को **'अध्यात्मवेत्ता, कहान-महान'** विषय पर ऑनलाइन साप्ताहिक गोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसकी अध्यक्षता अन्तरराष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त विद्वान डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल ने की। कार्यक्रम में डॉ. शान्तिकुमारजी पाटील, पण्डित परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल, पण्डित शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल एवं पण्डित पीयूषजी शास्त्री भी उपस्थित थे।

गोष्ठी के अन्तर्गत **'जीवन परिचय'** विषय पर अशेष जैन विदिशा ने, **'जीवन संबंधी प्रेरक प्रसंग'** विषय पर समर्थ जैन हरदा ने, **'प्रवचन अमृत से अध्यात्म-नवनीत'** विषय पर संयम जैन खनियांधाना ने, **'विद्वानों के अभिमत में गुरुदेवश्री'** विषय पर पवित्र जैन आगरा ने, **'यदि गुरुदेव ना होते तो'** विषय पर वैभव जैन ग्वालियर ने अपना वक्तव्य प्रस्तुत किया।

गोष्ठी का मंगलाचरण संदेश जैन दिल्ली ने, गीत प्रस्तुति सहज जैन पिड़ावा व समकित जैन ईसागढ ने एवं संचालन समर्थ शास्त्री विदिशा व विनय शास्त्री मुम्बई ने किया। गोष्ठी के ऑनलाईन तकनीकी सहयोगी पण्डित आकाशजी शास्त्री अमायन व पण्डित आकाशजी शास्त्री हलाज रहे।

* 3. दिनांक 20 मई को श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय के शास्त्री प्रथम वर्ष की ऑनलाइन साप्ताहिक गोष्ठी **'जैन रामायण'** विषय पर आयोजित की गयी, जिसकी अध्यक्षता पण्डित पीयूषजी शास्त्री जयपुर ने की। कार्यक्रम में डॉ. शान्तिकुमारजी पाटील जयपुर, डॉ. अरुणजी शास्त्री बण्ड जयपुर, पण्डित परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल एवं

पण्डित शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल भी उपस्थित थे।

गोष्ठी के अन्तर्गत **रामायण के मुख्य पात्र राम का आध्यात्मिक परिचय** विषय पर सुष्मित जैन सेमारी ने, **सीताजी के सैद्धांतिक विचार** विषय पर संयम जैन दिल्ली ने, **पश्चाताप की सम्यकता रामायण में** विषय पर अभिषेक जैन देवराहा ने, **पद्मपुराण गर्भित उपकथाओं का संकेत** विषय पर पारस जैन भिण्ड ने, **तराजू में रामायण** विषय पर समकित जैन ईसागढ ने, **पुण्य का दुष्प्रयोग-नारायण व प्रतिनारायण** विषय पर सर्वज्ञ जैन बरगी ने अपना वक्तव्य प्रस्तुत किया।

गोष्ठी का मंगलाचरण केयूर जैन गढी ने एवं संचालन संयम पुजारी खनियांधाना व शाश्वत जैन भोपाल ने किया। गोष्ठी के ऑनलाईन तकनीकी सहयोगी पण्डित आकाशजी शास्त्री अमायन व पण्डित आकाशजी शास्त्री हलाज रहे।

* 4. दिनांक 26 मई, 2020 को सायंकाल उपाध्याय वरिष्ठ द्वारा **जिनागम और जीवन जीने की कला** विषय पर गोष्ठी का आयोजन हुआ। गोष्ठी के अध्यक्ष श्री शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल जयपुर एवं विशिष्ट अतिथि पण्डित संजयजी शास्त्री जेवर थे।

इस अवसर पर पुष्प जैन आगरा ने **राग-शृंगार की कथाओं के परिप्रेक्ष्य में जीवन जीने की कला** विषय पर, सोहम शाह ने **क्या करणानुयोग में भी जीवन जीने की कला निहित है?** विषय पर, चेतन जैन गुढाचन्द्रजी ने **आचरण प्रधान आगम के आलोक में जीवन जीने की कला** विषय पर, अरविन्द जैन खड़ैरी ने **आत्मानुभूति और जीवन जीने की कला** विषय पर, आर्जव मोदी विदिशा ने **क्रमबद्ध की स्वीकृति में जीवन जीने की कला** विषय पर एवं समर्थ जैन हरदा ने **अनेकान्तात्मक पक्ष के संतुलन सहित ज्ञानियों के जीवन जीने की कला** विषय पर अपना वक्तव्य प्रस्तुत किया।

गोष्ठी का मंगलाचरण सक्षम जैन ललितपुर, संचालन संदेश जैन दिल्ली एवं तकनीकी सहयोग आकाश शास्त्री अमायन व आकाश शास्त्री हलाज ने किया। गोष्ठी के मार्गदर्शक पण्डित परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल थे।

समस्त कार्यक्रम ज़ूम एप एवं यूट्यूब के **Pandit Todarmal Smarak Trust** चैनल पर प्रसारित किये गये।

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो - वीडियो प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें -
वेबसाईट - www.vitragvani.com
संपर्क सूत्र - श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph.: 022-26130820, 26104912, E-Mail- info@vitragvani.com
ये सभी प्रवचन सामग्री अब vitragvani एप पर भी उपलब्ध है।

ऑनलाइन शिविर संपन्न

देवलाली ट्रस्ट के तत्त्वावधान में **जेनेक्स्ट** के सहयोग से विश्व का प्रथम ऑनलाइन बाल संस्कार शिविर दिनांक 17 से 22 अप्रैल तक आयोजित किया गया। प्रात: 7 बजे से रात्रि 10 बजे तक शिविर की गतिविधियाँ चली।

इस अवसर पर पण्डित बाबूभाई मेहता फतेहपुर, पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री खैरागढ, पण्डित आशीषजी शास्त्री टीकमगढ, पण्डित ज्ञायकजी शास्त्री मुम्बई, पण्डित सौरभजी शास्त्री मुम्बई, पण्डित विवेकजी शास्त्री इन्दौर, पण्डित अभिषेकजी शास्त्री मुम्बई, पण्डित सुदीपजी शास्त्री मुम्बई, पण्डित देवांगजी शास्त्री मुम्बई, पण्डित प्रतीकजी शास्त्री अहमदाबाद, पण्डित उर्विशजी शास्त्री देवलाली, पण्डित मंथनजी शास्त्री मुम्बई, पण्डित समकितजी शास्त्री भोपाल, श्रीमती स्वस्ति जैन जबलपुर, श्रीमती श्रुति जैन खैरागढ, श्रीमती प्रज्ञा जैन टीकमगढ, श्रीमती श्रेया गाला मुम्बई, श्रीमती शिल्पी जैन मुम्बई आदि विद्वानों द्वारा प्रतिदिन 28 कक्षाओं का आयोजन हुआ।

दोपहर में पण्डित विरागजी शास्त्री द्वारा सामूहिक कक्षा के माध्यम से अनेक वीडियो एनिमेशन एवं विभिन्न प्रमाणों के माध्यम से नैतिकता, देश भक्ति, हमारे कर्तव्य, हमारा खानपान और जैन सिद्धांतों का विशेष ज्ञान कराया गया।

रात्रिकालीन कार्यक्रमों में प्रतिदिन जिनेन्द्र भक्ति के साथ विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रमों व प्रश्नमंच का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम के अन्तिम दिन 784 बच्चों ने ऑनलाइन परीक्षा दी और उन सभी को विशेष कार्यक्रम में पुरस्कार देने की घोषणा की गई।

शिविर में देश-विदेश के ख्यातिप्राप्त विद्वान डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल, पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर, पण्डित शैलेषभाई तलोद, पण्डित रजनीभाई दोशी, पण्डित शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल, श्री अरिहंतप्रकाशजी झांझरी उज्जैन आदि विद्वानों के अतिरिक्त श्री अनंतराय अमुलखराय शेठ मुम्बई, श्री बसंतभाई दोशी मुम्बई, श्री प्रेमचंदजी बजाज कोटा, श्री विजयजी बड़जात्या इन्दौर, श्री अजितजी बड़ौदा, श्री प्रतीकभाई शाह अहमदाबाद, श्री सुनीलजी सर्राफ सागर आदि अनेक गणमान्य महानुभावों ने समय-समय पर शुभकामनाएं दीं।

इस कार्यक्रम का प्रसारण यूट्यूब चैनल **JAINEXT** और सोश्यल मीडिया के माध्यम से किया गया। शिविर में देशभर से लगभग 1300 परिवारों ने और लंदन, अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया, दुबई, फिनलैण्ड आदि देशों के जैन परिवारों के लगभग 150 बच्चों व उनके अभिभावकों ने लाभ लिया। इन्टरनेट तकनीक के विभिन्न माध्यमों से लगभग 20 हजार साधर्मियों ने इस शिविर में भाग लिया।

शिविर का निर्देशन श्री वीनूभाई शाह और श्री उल्लासभाई जोबालिया ने किया। पूज्य

श्री कानजीस्वामी स्मारक ट्रस्ट देवलाली के ट्रस्टियों ने इस शिविर के विद्वानों, सहयोगियों और सभी साधर्मियों का आभार व्यक्त किया।

संपूर्ण कार्यक्रम विरागजी शास्त्री के नेतृत्व में देवांगजी शास्त्री मुम्बई, मंथनजी शास्त्री मुम्बई के विशेष सहयोग से एवं सुदीपजी शास्त्री मुम्बई, महेशजी मलाड मुम्बई, श्रीमती किन्जल डेढिया मुम्बई, जिग्नेश भाई मलाड, आभास जैन पुणे आदि कार्यकर्ताओं के तकनीकी सहयोग से संपन्न हुआ।

ऑनलाइन व्याख्यान

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, जयपुर के तत्त्वावधान में दिनांक 6 अप्रैल से अन्तरराष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त विद्वान **डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल** द्वारा **'प्रवचनसार'** पर तथा **'भरत का अन्तर्द्वन्द'** पुस्तक का ई-लोकार्पण करते हुए मार्मिक व्याख्यान हुये। इन व्याख्यानों के अन्तर्गत डॉ. भारिल्ल ने इस युग के प्रथम चक्रवर्ती क्षायिक सम्यग्दृष्टि भरत की मनोदशा का अत्यंत सरल व सुबोध भाषा में वर्णन किया। इसके अतिरिक्त ज्ञानी जीव का राग कैसा होता है, वर्तमान समय में अपने परिणामों को कैसे सम्हालें, आचार्य कुन्दकुन्ददेव का उपदेश आदि अनेक विषयों पर भी मार्मिक व्याख्यान हुये। इसी लॉकडाउन के समय में डॉ. संजीवकुमारजी गोधा द्वारा मोक्षमार्गप्रकाशक एवं छहढाला ग्रंथ पर प्रतिदिन दोनों समय प्रवचन हुए। पण्डित पीयूषजी शास्त्री जयपुर द्वारा **मोक्षमार्गप्रकाशक** ग्रन्थ के आधार पर व्याख्यान हुए, जिसका संचालन पण्डित जिनेन्द्रजी शास्त्री ने किया। साथ ही दिनांक 29 मार्च से पण्डित जिनकुमारजी शास्त्री द्वारा भी **इष्टोपदेश एवं आत्मानुशासन** पर व्याख्यान हुये। पण्डित जिनेन्द्रजी शास्त्री द्वारा **भक्तामर** विषय पर कक्षाएं चलायी गई।

Covid-19 Jainism Camp

जयपुर (राज.) : यहाँ अर्हं पाठशाला द्वारा दिनांक 1 से 15 अप्रैल तक एक विशेष कैम्प का आयोजन किया गया, जिसमें अनेक विद्वानों द्वारा ज़ूम एप के माध्यम से प्रतिदिन विशेष कक्षाएं संचालित की गईं। डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर द्वारा निश्चय-व्यवहार (भेद-प्रभेद, प्रयोग विधि), पण्डित सोनूजी शास्त्री 'इसरो' अहमदाबाद द्वारा अनेकान्त-स्याद्वाद, पण्डित समकितजी शास्त्री खनियांधाना द्वारा हम हैं सच्चे जैनी, पण्डित अनुभवजी शास्त्री खनियांधाना द्वारा चौंसठ ऋद्धि विषय पर तथा पण्डित अमनजी शास्त्री दिल्ली द्वारा समवशरण की रचना **PPT** के माध्यम से कक्षाएं संचालित की गईं तथा अन्तिम दिन परीक्षाएं ली गईं।

कैम्प का संचालन पण्डित पीयूषजी शास्त्री, पण्डित जिनकुमारजी शास्त्री, पण्डित रूपेन्द्रजी शास्त्री एवं पण्डित आकाशजी शास्त्री अमायन के सक्रिय सहयोग से हुआ।

श्रुतपंचमी पर्व सानन्द संपन्न

• जयपुर (राज.) : यहाँ श्रुतपंचमी के अवसर पर श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय के विद्यार्थियों द्वारा **माँ जिनवाणी और हम** विषय पर विशेष परिचर्चा का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर प्रात: श्रुतपंचमी पूजन का आयोजन हुआ, तत्पश्चात् डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल एवं डॉ. शांतिकुमारजी पाटील के उद्बोधन का लाभ मिला। इसके पश्चात् परिचर्चा प्रारम्भ हुई, जिसकी अध्यक्षता डॉ. वीरसागरजी जैन दिल्ली ने की। परिचर्चा में पण्डित पीयूषजी शास्त्री, पण्डित जिनकुमारजी शास्त्री, पण्डित जिनेन्द्रजी शास्त्री भी उपस्थित थे।

परिचर्चा के अन्तर्गत स्वप्निल शास्त्री, अंकित शास्त्री, अरिहंत शास्त्री, संयम शास्त्री, संभव शास्त्री, पवित्र शास्त्री, आप्त अनुशील शास्त्री, अखिल शास्त्री, अमन शास्त्री एवं स्वानुभव शास्त्री ने अपना वक्तव्य प्रस्तुत किया।

कार्यक्रम का संचालन समर्थ शास्त्री व आकाश शास्त्री ने किया।

• जबलपुर (म.प्र.) : प्रथम श्रुतस्कंध के अवतरण दिवस श्रुतपंचमी के अवसर पर दिनांक 26 मई को जैनेक्स्ट एवं चहकती चेतना पत्रिका परिवार जबलपुर द्वारा श्रुतोत्सव का आयोजन किया गया।

इस कार्यक्रम में प्रात: श्रुतपंचमी पूजन के पश्चात् एक आध्यात्मिक गोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसमें पण्डित विरागजी शास्त्री जबलपुर, पण्डित अभयजी शास्त्री खैरागढ, पण्डित आशीषजी शास्त्री टीकमगढ, पण्डित ज्ञायकजी शास्त्री मुम्बई, पण्डित जितेन्द्रजी शास्त्री मुम्बई, पण्डित विवेकजी शास्त्री इन्दौर, पण्डित अभिषेकजी शास्त्री मुम्बई, पण्डित देवांगजी शास्त्री मुम्बई, पण्डित सुदीपजी शास्त्री मुम्बई, पण्डित राहुलजी शास्त्री मुम्बई, पण्डित विवेकजी जैन मुम्बई, पण्डित समकितजी शास्त्री भोपाल, पण्डित उर्विशजी शास्त्री देवलाली, विदुषी अनुप्रेक्षा शास्त्री मुम्बई आदि युवा विद्वानों ने प्रासंगिक एवं सारगर्भित विचार व्यक्त किये। दोपहर की सभा में पण्डित आशीषजी शास्त्री टीकमगढ एवं संयमजी जैन खैरागढ द्वारा श्रुतपंचमी पर आधारित सांस्कृतिक कार्यक्रम संपन्न हुआ। तदुपरान्त आध्यात्मिक कवि सम्मेलन संपन्न हुआ, जिसमें अनेक युवा कवियों ने अपनी आध्यात्मिक रचनाओं से तत्त्वज्ञान की प्रस्तुति की। रात्रि में पण्डित विरागजी शास्त्री द्वारा जिनवाणी प्रकाशन के इतिहास की पूरा घटना का विस्तार से वर्णन किया गया।

समस्त कार्यक्रम विरागजी शास्त्री के निर्देशन में संपन्न हुआ।

• कोटा (राज.) : यहाँ श्रुतपंचमी के अवसर पर श्री कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन मुमुक्षु आश्रम ट्रस्ट द्वारा ऑनलाइन विद्वत्संगोष्ठी श्री प्रेमचंदजी बजाज की अध्यक्षता में संपन्न हुई, जिसके मुख्य अतिथि एवं मुख्य वक्ता डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर थे। विशिष्ट

अतिथि के रूप में पण्डित संजयजी जेवर एवं पण्डित धर्मेन्द्रजी शास्त्री कोटा उपस्थित थे।

इस अवसर पर आदित्य जैन पिड़ावा, अभिनय जैन कोटा, समकित बांझल, समकित मोदी, उर्विष जैन पिड़ावा ने अपना वक्तव्य प्रस्तुत किया। इसके अतिरिक्त सम्यक् पाठशाला के विद्यार्थियों द्वारा शास्त्र सज्जा की गई, जिसमें रिद्धि जैन, आरोही जैन, चर्या जैन ने बहुत सुन्दर जिनवाणी सजायी। रात्रि में शास्त्र भक्ति का भी आयोजन हुआ।

गोष्ठी का मंगलाचरण आकाश जैन बादकपुर एवं संचालन पण्डित नीतेशजी कासलीवाल ने किया। अन्त में आभार प्रदर्शन मोहित जैन बण्डा ने किया।

"केवलि पण्णत्तो धम्मो मंगलम्" योजना की देशभर में धूम

ग्वालियर (म.प्र.) : यहाँ श्री समयसार विद्यानिकेतन आत्मायतन द्वारा श्री श्रुतपंचमी महापर्व के अवसर पर "**केवलि पण्णत्तो धम्मो मंगलम्**" योजना आयोजित की गई। यह योजना श्रुतपंचमी के एक सप्ताह पूर्व ही प्रारम्भ की गई, जिसके अन्तर्गत चार चरणों में जिनवाणी सजाओ प्रतियोगिता हुई।

प्रतियोगिता के अन्तर्गत देशभर से अनेक साधर्मियों ने प्रतियोगिता में भाग लिया। प्रतियोगिता के निर्णायक डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर, पण्डित संजयजी शास्त्री जेवर, पण्डित विपिनजी शास्त्री नागपुर एवं पण्डित शुद्धात्मप्रकाशजी शास्त्री ग्वालियर थे।

प्रतियोगिता का ऑनलाइन भव्य समापन समारोह दिनांक 30 मई को किया गया, जिसकी अध्यक्षता अन्तरराष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त विद्वान डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल ने की। मुख्य अतिथि के रूप में श्री अजितजी बड़ौदा एवं विशिष्ट अतिथि के रूप में डॉ. सतीशजी शास्त्री (डी.पी.एस.) अलीगढ थे। कार्यक्रम का मंगलाचरण श्री वीतराग-विज्ञान पाठशाला भाऊ का बाजार ग्वालियर के विद्यार्थियों ने किया। तदुपरान्त अध्यक्ष, मुख्य अतिथि व विशिष्ट अतिथि महोदय का उद्बोधन हुआ।

प्रतियोगिता में सभी को अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन ग्रेटर ग्वालियर द्वारा ऑनलाइन प्रमाण पत्र एवं पुरस्कार राशि प्रदान की गई। प्रतियोगिता की रूपरेखा विद्यानिकेतन के निर्देशक पण्डित शुद्धात्मप्रकाशजी शास्त्री ने एवं क्रियान्वयन श्रीमती अंजलि जैन व शाश्वत जैन ने किया।

अन्त में समयसार विद्यानिकेतन के अध्यक्ष श्री सतीशजी जैन ठेकेदार ने सभी साधर्मीजनों को आत्मायतन पधारने का आमंत्रण दिया, समयसार विद्यानिकेतन की प्राचार्या श्रीमती अंजलि जैन ने सभी अतिथियों, प्रतियोगियों व साधर्मियों का आभार व्यक्त किया।

– धनेन्द्रकुमार शास्त्री

जैन संस्कार ई शिक्षण शिविर - मेरठ

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट जयपुर की प्रेरणा से, तीर्थधाम चिदायतन हस्तिनापुर मेरठ के तत्त्वावधान में अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन मेरठ द्वारा दिनांक 25 से 31 मई तक 'जैन संस्कार ई शिक्षण शिविर' आयोजित किया गया।

25 मई को डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल, श्री पवनजी जैन मंगलायतन, श्री अजितजी जैन दिल्ली एवं श्री सुरेशजी जैन रितुराज (राष्ट्रीय अध्यक्ष भारतीय जैन मिलन) का उद्बोधन हुआ।

शिविर में प्रतिदिन तीनों समय बाल एवं प्रौढ वर्ग की विविध कक्षाओं के अतिरिक्त जिनेन्द्र-पूजन, जिनेन्द्र-भक्ति एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों का भी आयोजन किया गया।

सायंकाल आयोजित सामूहिक कक्षा में अन्तरराष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त विद्वान डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल जयपुर, श्री पवनजी मंगलायतन, डॉ. वीरसागरजी जैन दिल्ली, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर, पण्डित शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल जयपुर, पण्डित विरागजी शास्त्री जबलपुर, डॉ. मनीषजी शास्त्री मेरठ, पण्डित विपिनजी शास्त्री नागपुर, ब्र. श्रेणिकजी जबलपुर आदि विद्वानों का लाभ प्राप्त हुआ। प्रौढ कक्षा का संचालन पण्डित निखिलजी शास्त्री मेरठ द्वारा हुआ।

दिनांक 31 मई को प्रात: ऑनलाइन परीक्षा हुई तथा सायंकाल समापन समारोह में श्री जे.के. जैन शामली, श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल जयपुर, श्रीमती बीनाजी देहरादून, श्री अजितजी बड़ौदा, श्री आई.एस. जैन मुम्बई, श्री आशीषजी जैन शामली एवं श्री निशांत जैन आईएएस मेरठ का उद्बोधन प्राप्त हुआ। अन्त में श्री सौरभजी जैन ने सबका आभार प्रकट किया एवं श्री अजयकुमारजी ने संबोधन देकर सभा का समापन किया।

शिविर निर्देशक अजय जैन व सौरभ जैन के साथ साथ रोहित जैन, संयम जैन, आयुष जैन, अपार जैन, पूजा जैन, अतुल जैन एवं पाठशाला की पूरी टीम विवेक शास्त्री, समकित शास्त्री, सुदीप शास्त्री आदि ने कार्यक्रम में तकनीकी सहायता प्रदान की।

समस्त कार्यक्रम ज़ूम एप, यूट्यूब एवं फेसबुक के माध्यम से प्रसारित किया गया।

– मुकेशचंद जैन (अध्यक्ष), सौरभ जैन (महामंत्री)

दो विशेष सेमिनार संपन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ अर्हं पाठशाला द्वारा रविवार, दिनांक 29 मार्च को रात्रि में एवं सोमवार, दिनांक 30 मार्च को रात्रि में विशेष सेमिनारों का आयोजन किया गया, जिसमें डॉ. संजीवकुमारजी गोधा द्वारा ''**क्या करें अंत समय (कोरोना) में**'' विषय पर तथा श्री शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल द्वारा ''**एक नयी शुरुआत युवाओं के साथ**'' विषय पर आकर्षक वक्तव्य प्रस्तुत किये गये। हमें बताते हुए अत्यंत प्रसन्नता हो रही है कि इनका लाभ **लगभग 50 हजार** लोगों ने **ptst** एवं **sanjeevgodha youtube** चैनल तथा अर्हं पाठशाला **Facebook Page** के माध्यम से लिया।

– आकाश शास्त्री, अमायन

शोक समाचार

(1) लेक्जिंगटन (अमेरिका) निवासी डॉ. महावीरजी शाह का दिनांक 14 अप्रैल को शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आप पिछले 20 वर्षों से JAANA के सदस्य थे। विदेशों में जिनशासन की प्रभावना में आपका अविस्मरणीय योगदान रहा है।

आपने डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल द्वारा लिखित ज्ञायकभाव प्रबोधिनी टीका सहित ग्रंथाधिराज समयसार और छहढाला का सार ग्रंथ के सेट 2000 की संख्या में अमेरिका के सभी नगरों में घर-घर पहुंचाने का एवं पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के प्रवचन की सी.डी. और डॉ. भारिल्ल के प्रवचन की सी.डी. भी आपने घर-घर पहुंचाने का महान कार्य किया है।

(2) जयपुर (राज.) निवासी श्रीमती राजकुमारी जैन लीला धर्मपत्नी स्व. श्री महावीरप्रसादजी जैन लीला का दिनांक 30 मई को शांत परिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आप अत्यंत स्वाध्यायी थीं एवं निरंतर तत्त्वज्ञान का लाभ लिया करती थीं।

(3) शाहगढ (म.प्र.) निवासी तीर्थधाम सिद्धायतन-द्रोणगिरि के ट्रस्टी श्री ब्या ज्ञानचंदजी जैन का दिनांक 8 जून को शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आप अत्यंत स्वाध्यायी थे एवं द्रोणगिरि में तत्त्वप्रचार की गतिविधियों में सक्रिय सहयोग प्रदान करते थे।

(4) बांसवाड़ा (राज.) निवासी श्रीमती रूपारीबेन धर्मपत्नी स्व. श्री धूलजीभाई ज्ञायक का दिनांक 22 मार्च को शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। ज्ञातव्य है कि आप श्री महिपालजी ज्ञायक बांसवाड़ा की माताजी थीं।

(5) जयपुर (राज.) निवासी श्रीमती रत्नप्रभा तोतुका धर्मपत्नी स्व. श्री सुरेशचंदजी तोतुका का दिनांक 6 अप्रैल को शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। ज्ञातव्य है कि आप श्री अजितजी तोतुका की माताजी थीं। टोडरमल स्मारक में चलने वाली समस्त गतिविधियों में आपका सक्रिय सहयोग रहता है।

(6) उदयपुर मुमुक्षु मण्डल के अग्रणी, स्वतंत्रता सेनानी **उदयपुर (राज.) निवासी श्री सुजानमलजी गदिया** का दिनांक 9 मई को शांत- परिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आप अनेक वर्षों तक मुमुक्षु मण्डल उदयपुर के मंत्री रहे। आपकी प्रेरणा से ही श्री कुन्दकुन्द वीतराग विज्ञान शिक्षण समिति का गठन हुआ, जिसके माध्यम से अनेक बाल संस्कार शिविरों का आयोजन हुआ। आपके निमित्त से त्रिकालवर्ती जिनालय व पंचमेरु की भी रचना हुई।

(7) जलगांव (महा.) निवासी ब्र. पद्माबेन केशवलाल शाह का दिनांक 25 अप्रैल को 89 वर्ष की आयु में शांतपरिणामों से देहावसान हो गया। आप गुरुदेवश्री द्वारा ब्रह्मचर्य लेने वाली प्रथम बैंच की बहनों में से थीं।

दिवंगत आत्माएं चतुर्गति के दु:खों से छूटकर शीघ्र ही अनंत अतीन्द्रिय आनन्द को प्राप्त हों – यही मंगल भावना है।

गुरुवाणी मंथन शिविर संपन्न

श्री कुन्दकुन्द कहान दिग. जैन तीर्थ सुरक्षा ट्रस्ट मुम्बई एवं श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट मुम्बई द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित पंचम गुरुवाणी मंथन शिविर ऑनलाइन संपन्न हुआ, जिसका उद्घाटन दिनांक 27 मई को श्री नेमिषभाई शांतिलाल शाह मुम्बई द्वारा किया गया।

दिनांक 27 मई से 31 मई तक आयोजित इस शिविर में प्रतिदिन प्रात: गुरुदेवश्री द्वारा नियमसार (गाथा 47-48) पर प्रवचनों के आधार से पण्डित देवेन्द्रकुमारजी बिजौलिया के व्याख्यान हुये। दोपहर में गुरुदेवश्री द्वारा प्रवचनसार (गाथा 192) पर हुए प्रवचन के आधार से पण्डित रजनीभाई दोशी हिम्मतनगर के व्याख्यान हुये। रात्रि में गुरुदेवश्री के समयसार (गाथा 15) पर हुए प्रवचनों पर पण्डित चेतनभाई मेहता राजकोट द्वारा चर्चा की गई। अन्तिम दो दिनों में डॉ. शांतिकुमारजी पाटील जयपुर द्वारा गुरुदेवश्री के समयसार कलश 120 पर हुए प्रवचनों पर चर्चा हुई।

कार्यक्रम में श्री कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन तीर्थसुरक्षा ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री अनंतराय ए. शेठ, महामंत्री श्री बसंतभाई एम.दोशी, मंत्री श्री महिपालजी ज्ञायक एवं सहमंत्री श्री विनुभाई शाह के उद्बोधन का भी लाभ प्राप्त हुआ।

समस्त कार्यक्रम निर्देशन श्री विरागजी शास्त्री के नेतृत्व में मुम्बई के संगठन जैनेक्स्ट के सहयोग से एवं पण्डित ज्ञायकजी शास्त्री मुम्बई के विशेष सहयोग से संपन्न हुआ।

ऑनलाइन धार्मिक कक्षाएं संचालित हुईं

ऑनलाइन कक्षाओं की शृंखला में पूज्य श्री कानजीस्वामी स्मारक ट्रस्ट, **देवलाली** के तत्त्वावधान में **जेनेक्स्ट** के सहयोग से दिनांक 27 अप्रैल से 9 मई तक ऑनलाइन धार्मिक कक्षाओं में चार गति, मैं कौन हूँ आदि अनेक विषयों का अध्ययन कराया गया।

इस अवसर पर पण्डित विरागजी शास्त्री जबलपुर, पण्डित अभयजी शास्त्री खैरागढ तथा मुम्बई के पण्डित ज्ञायकजी शास्त्री, पण्डित राहुलजी शास्त्री, पण्डित जितेन्द्रजी शास्त्री, पण्डित जिनेशजी शेठ, पण्डित सुदीपजी शास्त्री, पण्डित मंथनजी शास्त्री, श्रीमती अनुप्रेक्षा शास्त्री आदि 14 विद्वानों ने कक्षाओं में अध्यापन कराया। दो बार शंका-समाधान के माध्यम से बाल मन की शंकाओं का आगम के अनुरूप समाधान किया गया।

समस्त कार्यक्रम का निर्देशन पण्डित विरागजी शास्त्री द्वारा हुआ।

आवश्यक सूचना

जो पाठकगण वीतराग-विज्ञान (मासिक) ईमेल पर भी मंगाना चाहते हैं, वे अपनी ईमेल आई. डी. भेजें – वाट्सअप नं. 9660668506 **पीयूष कुमार जैन,** व्यवस्थापक-वीतराग विज्ञान

सम्मानित हुए Jain's Got Talent के प्रतिभागी

जयपुर (राज.) : यहाँ अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन जयपुर एवं सर्वोदय अहिंसा अभियान के संयुक्त तत्त्वावधान में विविध क्षेत्रों में रुचि रखने वाली प्रतिभाओं के लिये अन्तरराष्ट्रीय ऑनलाइन प्रतिस्पर्धा **Jain's Got Talent** का आयोजन किया गया, जिसमें 14 प्रतियोगिताओं में 743 प्रतिभागियों ने भाग लिया। समस्त विजेताओं को दिनांक 7 जून को विशेष कार्यक्रम के अन्तर्गत सम्मानित किया गया।

कार्यक्रम के अध्यक्ष श्री अजितप्रसादजी जैन दिल्ली, मुख्य अतिथि श्री प्रेमचंदजी बजाज कोटा एवं विशिष्ट अतिथि डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर थे।

विविध प्रतियोगिताओं के अन्तर्गत भजन प्रतियोगिता में नेहा शाह सोलापुर, वाद्ययंत्र में अरचेश पाटोदी इन्दौर, नृत्य में वीनस जैन मुम्बई, मोनो एक्टिंग में विदेही व नियति जैन दिल्ली, ड्रॉइंग में प्रमिति जैन जयपुर, स्केचिंग में प्रजल जैन खनियांधाना, कंठपाठ में प्रशम जैन पंढरपुर व अनन्या जैन मेरठ, ग्राफिक्स डिजाइनिंग में विनीत जैन हैदराबाद व निपुण जैन भोपाल, वीडियो मेकिंग में लिपि व हर्षिता जैन उदयपुर, कहानी कथन में विशुद्ध जैन सनावद, आर्टिकल में श्रीमती सरोज जैन दमोह, कविता में मोहिनी जैन ललितपुर, प्रोजेक्ट मेकिंग में यश व उत्कर्ष जैन अकोला, रंगोली में सपना दोशी पूना, भाषण में विदेही व नियति जैन दिल्ली को सम्मानित किया गया। इसके अतिरिक्त प्रयत्न जैन भोपाल को बीट बॉक्सिंग, आरोही जैन कोटा को तीसरी आंख, विदेही व नियति जैन दिल्ली तथा हर्षिता व लिपि जैन उदयपुर को मल्टी टेलेंटेड का पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया।

कार्यक्रम का संचालन संयम शास्त्री व सन्देश शास्त्री ने एवं आभार प्रदर्शन इंजी. अनिलजी जैन दिल्ली ने किया। आयोजन को सफल बनाने में ऋषभजी शास्त्री दिल्ली, संजयजी शास्त्री जयपुर व दीपकराजजी जैन छिन्दवाड़ा के सहयोग के साथ-साथ तकनीकी सहयोग विनीतजी शास्त्री मुम्बई व फैडरेशन के सभी सदस्यों का मिला।

द्विदिवसीय अनुयोग गोष्ठी संपन्न

दिल्ली : यहाँ विश्वास नगर स्थित ब्राह्मी सुन्दरी कन्या विद्यानिकेतन द्वारा दिनांक 5 व 6 जून को अनुयोग गोष्ठी का आयोजन किया गया।

गोष्ठी के अध्यक्ष श्री अजितजी जैन राजपुर रोड थे। **प्रथमानुयोग** वक्ता के रूप में पण्डित संजयजी शास्त्री जेवर, **करणानुयोग** वक्ता के रूप में डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर, **चरणानुयोग** वक्ता के रूप में डॉ. अनेकान्तजी जैन दिल्ली एवं **द्रव्यानुयोग** वक्ता के रूप में पण्डित राजेन्द्रजी जबलपुर उपस्थित थे। विशिष्ट वक्ता पण्डित प्रद्युम्नकुमारजी जैन मुजफ्फरनगर थे। कार्यक्रम का मंगलाचरण कु. दर्शी जैन दिल्ली एवं संचालन पण्डित समकितजी शास्त्री खनियांधाना ने किया।

पण्डित टोडरमल सर्वोदय ट्रस्ट
द्वारा आयोजित

43 वाँ आध्यात्मिक E – शिक्षण शिविर

रविवार 19 जुलाई से मंगलवार 28 जुलाई 2020 तक

अग्रिम आमंत्रण

» वर्तमान परिस्थिति को देखते हुए यह शिविर ऑनलाइन आयोजित किया जायेगा।

» इस शिविर का सम्पूर्ण प्रसारण Zoom App और टोडरमल स्मारक के Youtube चैनल पर किया जायेगा।

» शिविर की विस्तृत आमंत्रण पत्रिका शीघ्र भेजी जाएगी।

» विधान, पूजन, भक्ति का अपूर्व आनन्द।

» प्रवचन, गोष्ठी, व्याख्यानमाला के माध्यम से तत्वज्ञान की भरपूर वर्षा।

» बालको के लिए विशेष कक्षाओं का आयोजन एवं रोचक ज्ञानवर्धक कार्यक्रम।

संपर्क- डॉ. शान्तिकुमार पाटिल - 97856 49333 | प. पीयूष शास्त्री - 97856 43202
प.जिनकुमार शास्त्री - 80724 46379

निवेदक : समस्त ट्रस्टीगण, पंडित टोडरमल सर्वोदय ट्रस्ट

R.N.I. No. 38278/83 ***Postal Regd. No. JaipurCity/421/2018-20***

कहान सोसायटी में बन रहे फ्लेटों में ब्लॉक बी, सी, डी का कार्य पूर्ण

संपर्क – प्रेमकुमारजी (9754552550)

सम्पादक :
डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल
शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., पीएच. डी.
सह-सम्पादक :
डॉ. संजीवकुमार गोधा
एम.ए.द्वय , नेट, एम. फिल (जैनदर्शन), पीएच.डी.
प्रकाशक एवं मुद्रक :
ब्र. यशपाल जैन, एम. ए.
द्वारा पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के लिये
जयपुर प्रिंटर्स प्रा.लि., जयपुर से
मुद्रित एवं प्रकाशित।

प्रकाशन तिथि : 24 जून 2020

If undelivered please return to -- **Pandit Todarmal Smarak Trust , A-4, Bapu Nagar, Jaipur - 302015**